4 ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्
भगवान इस जग के कण-कण में विद्यमान है।

पंजाब केसरी

दिल्ली, 24 अप्रैल, 2011 रविवार

अपशब्द प्रयोग करने का अर्थ यह है कि मुझमें इतनी भी अक्ल नहीं है कि मैं अन्य शब्दों का चयन कर सकूं।

विश्व बुक-डे पर प्रसिद्ध लेखिका डा. सुचिता मलिक चंडीगढ़ में एक कार्यक्रम के दौरान पाठकों से अपने बहुचर्चित दो नावल 'इंडियन मेम साहिब' तथा 'मेम साहिब क्रोनिकल' के बारे में उनके द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब देती हुई। (छाया : अनिल पुरी)

4 ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्
भगवान इस जग के कण-कण में विद्यमान है।

पंजाब केसरी

दिल्ली, 24 अप्रैल, 2011 रविवार

अपशब्द प्रयोग करने का अर्थ यह है कि मुझमें इतनी भी अक्ल नहीं है कि मैं अन्य शब्दों का चयन कर सकूं।

विश्व बुक-डे पर प्रसिद्ध लेखिका डा. सुचिता मलिक चंडीगढ़ में एक कार्यक्रम के दौरान पाठकों से अपने बहुचर्चित दो नावल

Peep into civil servants' lives

BALWINDER KAUR

Memsahib's Chronicles: A Story of Grit & Glamour

By Suchita Malik.
Rupa. Pages 218. Rs 295.

IN a billion strong nation, it's important to be important. Becoming an IAS officer is a direct route to power and influence. This book is a peek into that sought-after existence, as the jacket reads, "*Memsahib's Chronicles: A Story of Grit and Glamour* attempts to present the amazing world of these civil servants as it is — full of girt, glamour, tensions, temptations and privileges."

Author Suchita Malik carries forward the tale that began in her debut novel *Indian Memsahib*. The story of Sunaina, the wife of a senior civil servant, Raghu, is set in Chandigarh. The reader is made privy to her innermost thoughts as she takes them on a private tour of the well-guarded world of the sahibs.

We see the protagonist Sunaina in an introspective state of mind after spending 25 years as better half of an important man. She evaluates her life choices, fearing she has been reduced to a stereotype. Ironically, power is a word synonymous with the civil services, yet we see her desperately making efforts to take control of her life. We find her trying to reconcile the various aspects of her life and herself. Much of this is a woman rattling around in her head; there is a constant back and forth between what she wants and what she can have.

There is a stark contrast between the jovial bonhomie of social situations and Sunaina's angst-ridden thoughts. Nevertheless, her vibrant spirit shines through as she still seeks out and luxuriates in new experiences. The reader harbouring preconceived notions, expecting Sunaina to be somehow weighed down by privilege, will find a woman yearning for something more.

Sunaina and Raghu's marriage takes centre stage in the book. While she greatly respects his commitment to the welfare of the public, she resents playing second fiddle to his job, the real love of his life. We see her desperately trying to connect with him. Probed and cajoled by his wife, Raghu's accounts of his experiences in the line of duty provide insight into the inner workings of this powerful profession. The problem is that her husband is a good man, a good provider and a hard worker but also an absentee partner and an uninvolved parent.

This story will strike a chord with most people who after raising children often find themselves married to virtual strangers. There is also the scrutiny of the institution of marriage where even privileged working women cannot escape stereotypical gender roles. This is a universal equaliser, all women can relate to constantly sacrificing their desires at the altar of marriage, for a woman's dreams are not her own only coming after her family.

However, the readers who haven't read *Indian Memsahib* will not know where this story began and have missed seeing the characters develop fully. We don't really see Sunaina in her element as a teacher and a mother. Also, the reader looking for something salacious may be disappointed by the lack of juicy details and scandal.

The author has demystified the

powerful elite, making the charact
enviable yet relatable. The book p
a human face to the sacrosanct,
powerful bureaucracy both env
and maligned in equal measures.
the end of the day, it is not a story
careers, parties or society; it is a
of people. The characters eyes are
reader's eyes. She is every wom
So, let the writer, nay Sunaina, t
you along on a journey, the gran
journey of all — life.

न औद्योगिकीकरण एवं शहरीकरण से पर्यावरण को
स्त नुक्सान पहुंचा है जिसके लिए यूएनओ जैसे
ष्ट्रीय संगठनों ने भी आवाज उठाई है। यही कारण है
री दुनिया में सभी सरकारें वनों को लेकर सजग हुई हैं।

इक साहब की कहानी मेम साहब की जुबानी

मैं जब तय वक्त पर इंटरव्यू करने जा रहा था और रास्ते में यूं ही सोचता भी जा रहा था कि एक अंग्रेजी के उपन्यास का और उसके अलावा एक कालेज में इंग्लिश की लैक्चरार के बारे में। जाहिर है बहुत पढ़ी-लिखी वह होगी ही और यूं ही दिमाग में लेखिका का एक चेहरा सा चक्कर लगा रहा था कि मोटे-मोटे शीशों वाले चश्मे लगा रखे होंगे और एक हाई क्लास हरियाणा के आफिसर अर्थात् हरियाणा के उद्योग विभाग के वित्तायुक्त व प्रधान सचिव की पत्नी सुचिता मलिक ने पहनावे में भी जीन्स के साथ कोई फैशनेबल टॉप पहन रखा होगा और एक अफसर की बीवी होने के कारण उसकी गर्दन जरूर गरूर से अकड़ी सी होगी कि जैसे अक्सर बड़े अफसरों की बीवियों की होती है और वो अगर बात भी करती हैं तो वो शुद्ध इंग्लिश को अपनी जुबान को गोल घुमा कर यानी इंग्लिश भाषा को भी डिस्को डांस करवा कर बोलती हैं ... कोठी पर पहुंचने पर गेट पर खड़े नौकर ने बताया कि मेम साहब आपका इंतजार कर रही हैं और वो मुझे ड्राईंग रूम में छोड़ आया... वाह! ड्राईंग रूप का क्या नजारा था। खुद अपने आप में हिंदुस्तान की संस्कृति की एक आर्ट गैलरी जैसा महसूस हो रहा था और ताज्जुब की बात तो यह थी कि हिंदुस्तानी परंपरागत वस्तुओं के अलावा जहां-वहां कुछ देवताओं और भगवान गणेश की भी मूर्तियां बड़े ही सुसज्जित ढंग से रखी हुई थी। मैं ये सब कुछ देखता भी जा रहा था और जिन मोहतरमा की मैं किताबों की इंटरव्यू करने आया था, उनका इंतजार भी कर रहा था और मन ही मन यह सोच रहा था कि इंग्लिश में नावल की लेखिका और कालेज में भी अंग्रेजी की लैक्चरर और इतने हाई-फाई अफसर की बीवी तो उसे मिलने पर मुझे अपना परिचय इंग्लिश में ही करवाना उचित होगा... और पिछले कमरे में ड्राईंग रूम में पहुंची सैंडलों की आवाज सुनकर मैं समझ गया था कि मैडम पधार चुकी हैं और मैंने पलटते ही वही अपनी रटी-रटाई इंट्रोडक्शन देने से पहले- 'हैलो मैम! माई सैल्फ...' मेरी इंट्रोडक्शन को वो बीच में ही काटते हुए मुझे दोनों हाथ जोड़कर नमस्ते कहा और बैठने का इशारा करते हुए वह शुद्ध हिंदी में बोलीं, ''मुझे फोन पर ही आपने अपना पूरा परिचय दे दिया था और मुझे सुचिता मलिक कहते हैं और मेरे साहब का नाम युद्धवीर सिंह मलिक है और वो हरियाणा सरकार में वित्तायुक्त पद पर आसीन हैं...।'' इससे पहले कि मैं उनसे कोई सवाल पूछता, मेरा मुंह खुले का खुला रह गया, क्योंकि जो तस्वीर और जो अक्स अपने दिमाग में बिठाया था वो एक प्रतिशत भी मेरी सोच से मेल नहीं खा रहा था। बिल्कुल हिंदुस्तानी बनारसी साड़ी पहने और माथे पर लाल सिंदूर का टीका और गले में साधारण-सी माला पहने श्रीमती मलिक आम एक शुद्ध हिंदुस्तानी औरत से भी कहीं ज्यादा हिंदुस्तानी नजर आ रही थीं, जो कि किसी भी इंसान के लिए उसकी सोच से बाहर हो सकता है कि इतने बड़े अफसर की बीवी होने का पद पाना। इसके अलावा इंग्लिश भाषा में एक नहीं, दो-दो किताबें लिखना और उसके बावजूद बिल्कुल साधारण नजर आना... बहरहाल, मेरे कोई सवाल पूछे जाने से पहले ही उन्होंने चहकते और मुस्कराते हुए मुझे बताया कि आपको ताज्जुब होगा कि अस्सी के दशक में मेरी पहली कहानी हिंदी में सर्वप्रिय हिंदी के अखबार यानी आपकी 'पंजाब केसरी' में छपी थी और दुनिया व घर वालों ने मुझे उस लेख के छपने पर खूब शाबाशी भी दी थी। खैर! वक्त बदला, मैं भी एक सरकारी अधिकारी की बीवी होने के नाते अपने पति की देखभाल, बच्चों की देखभाल और बचा-खुचा वक्त इंग्लिश पढ़ने और लिखने में लगाने लगी और मैंने अपने चहेते पत्रकार खुशवंत सिंह को दिखाई और उन कहानियों को पढ़ने के बाद खुशवंत सिंह ने मुझे आशीर्वाद देते हुए कहा था कि तुम्हारे लेखनी में दम है, जो कि अक्सर युवा पीढ़ी में नहीं होता। किताब लिखो और मैं यकीन से कह सकता हूं कि तुम एक दिन बहुत बड़ी लेखिका बनोगी। इन शब्दों ने मेरे अंदर सोई लेखिका को झिकझोड़ कर उठाया और मुझमें इतना जोश भर आया और मेरे दिमाग में सबसे पहले अपने समुदाय यानी आईएएस आफिसरों के परिवारों, उनकी पत्नियों और बच्चों की जिंदगी की असलियत के बारे में लिखने का विचार आया, क्योंकि अक्सर लोगों का यही मानना होता है कि अफसरों की बीवियों के खूब ठाठ होते हैं, लाल बत्ती की गाड़ी में घूमती-फिरती हैं, जो वो चाहती हैं अलाद्दीन के चिराग को घिसने से पहले ही वो हर मनपसंद चीज पा लेती हैं, लेकिन यह गलत है। मैंने 2008 में इसी विषय पर पहली किताब 'इंडियन मेम साब' लिखी थी और इस किताब को पढ़ने के बाद लोग एक साहब और उसकी बीवी और बच्चों के बीच दुनिया को न नजर आने वाली मुश्किलों के बारे में पता चला। और तो और मुझे आईएएस अफसरों की बीवियों के तमाम भारत से फोन आए और तकरीबन सभी का मानना था कि यह सब कुछ जिंदगी का घटनाक्रम उनकी अपनी जिंदगी पर लिखा गया है और ज
दिल्ली के लैफि
खन्ना ने पढ़ा, ज
के बहुत बड़े अ
भी जाने जाते है
देते हुए कहा कि
बाद मुझे न जा
रहा है कि तुमने
पूरा न लिखते ह
दिया है। कृपा क
और एक किता
बहुत दबाव डाल
बड़ी बात और
और मैंने अपनी
साहब-द क्रानि
ग्लैमर' लिखी
विमोचन हाल
प्रथम सप्ताह में दि
तेजेन्दर खन्ना
लोगों ने भी इसे
इसके किताब के
हाथ किताबें बि
और संस्करण
सोच रहे हैं। लिह
सवाल को पूछे
का पूरा इंटरव्यू
इससे ज्यादा मैं
पर्सनैलिटी से मि
बहुत खुश था
खुश इसलिए था
तंग होने के कारण
भी अंग्रेजी में पूछ
मिला। ● अनि

The Tribune

4 Lifestyle TUESDAY | MARCH 1 2011

Yes *Memsahib*

Deepali Sagar

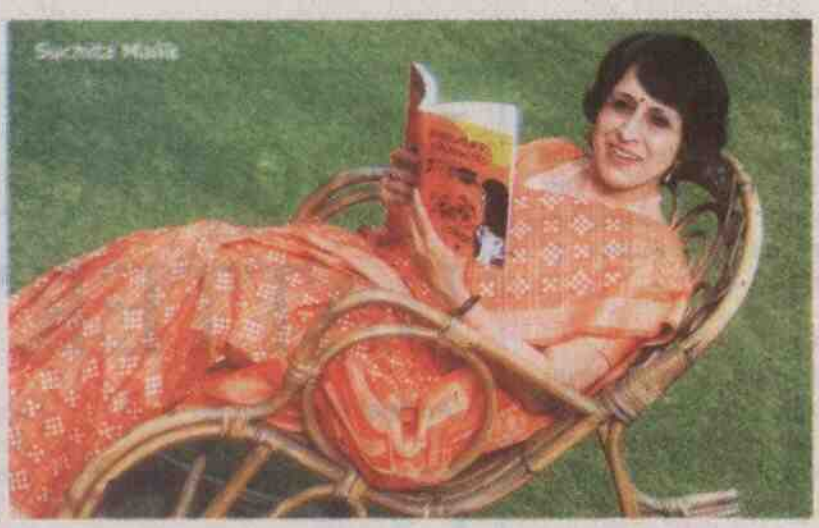

How does it feel to be an IAS officer's wife? Ask Suchita Malik or even better read her book *Memsahib's Chronicle: A story of Grit and Glamour*, sequel to her first book *Indian Memsahib- The untold story of a bureaucrat*. "I have divided my sequel into two episodes. The story is a mixture of lives of officers and their wives," she says.

About the book

"People are very fascinated by the lives of civil servants. They think that we are a privileged lot and for us everything comes served on a platter. But people see only the outward glamour. It is like watching cinematography. You get to see the bright side of the picture. No one is interested to see the grind behind those grand scenes," she says. She feels that while writing a novel, the subject chosen should be such about which you have comprehensive knowledge. " Khushwant Singh once told me that the subject of a novel should be something with which you are familiar with. I have been an IAS officer's wife for the past 25 years. So, I decided to use this as my storyline. I wanted to give readers a peep into a bureaucrats world and enable them to see for themselves the compromises we have to make on the career and individual front."

Journey until now

"I started my career with teaching English Literature. Later on, I started writing columns in newspapers. It was then when I thought of writing a book. Even though, I was new to the publishing field still it was not very difficult for me. After finishing my manuscript I found a publisher. But I had to wait for a long time to see my work in a hardbound copy. Moreover, this is my personal achievement not that of a memsahib," says Suchita.

Future endeavors

Is there going to be another sequel to *Memsahib's Chronicle*? "I have not decided what my next topic would be. I might pick up a subject of general interest. But one thing is for sure, I won't stop writing," she says.

iv
पंजाब केसरी
नई दिल्ली/ जयपुर
मंगलवार, 1 मार्च, 2011
Website : www.punjabkesari.com

पुस्तक समीक्षा

अंग्रेजी साहित्य जगत में कई महिलाओं ने अपनी कृति से सामाजिक परिवेश में नई रौशनी का सूत्रपात किया है। इसी कड़ी में लेखिका डा. सुचिता मलिक हैं जिनकी नवीनतम पुस्तक 'मेमसाहब क्रानिकल- ए स्टोरी बाय ग्रीट एंड ग्लैमर' रूपा एंड कंपनी द्वारा प्रकाशित की गई है जो उनकी पहली पुस्तक 'इंडियन मेमसाहब' की दूसरी कड़ी है। सुचिता मलिक ने लेडी श्रीराम कालेज से अंग्रेजी साहित्य में स्नातक करने के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय से एमए किया। फिर भारतीय विद्या भवन से पत्रकारिता में डिप्लोमा किया फिर 1995 में डाक्टरेट की डिग्री हासिल की। वर्तमान समय में वह चंडीगढ़ के गर्वनमेंट कालेज में अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य पढ़ा रही हैं।

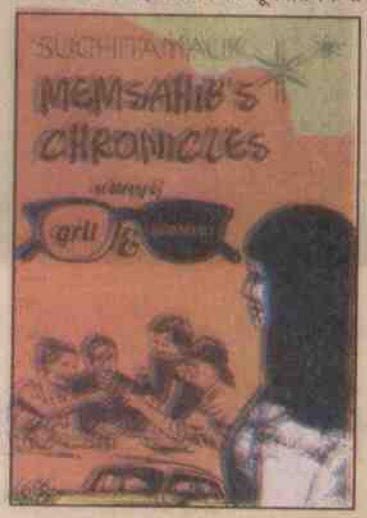

वह लेखन कार्य में काफी सक्रिय रही हैं और उनकी अनेक रचनाएं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। इस पुस्तक में लेखिका ने भारत में नौकरशाहों के जीवन और उनकी पत्नियों के जीवन चरित्र को उजागर किया है। रघु और सुनयना इंडियन मेमसाहब के मुख्य पात्र हैं। सुनयना जो सिस्टम से पूरी तरह से जुड़ी हुई हैं, बड़ी ही संयम भरी उदासीन भरी आंखों से उस दुनिया की ओर देखती है जो उन्हें बाहर से काफी घिरा हुआ और ताकतवर मानते हैं। पुस्तक के जरिए यह बताने की कोशिश की गई है कि ज्यादातर मेमसाहब का जीवन खुशमय, आनंदमय, गार्डन पार्टी, पिकनिक और फैशन शो तक सीमित होता है, लेकिन इसके बावजूद भी कुछ नौकरशाहों की पत्नियां इस आजादी का भरपूर मजा लेती हैं। पुस्तक के अनुसार आकर्षक और जोशीले भरे माहौल में रहने वाली ये महिलाएं अपने घरेलू मोर्चों से बेपरवाह होकर भी नौकरशाहों के जीवन में प्रमुख भूमिका अदा करती हैं, रीढ़ बनी हुई हैं। इस पुस्तक से भारत के नौकरशाहों के पारिवारिक जीवन को और अधिक अच्छी तरह से समझने का अवसर पाठकों को प्राप्त होगा।

पुस्तक : मेमसाहब क्रानिकल ए स्टोरी आफ ग्रीट एंड ग्लैमर, **लेखिका** : सुचिता मलिक, **पृष्ठ संख्या** : 204, **मूल्य** : 195 रुपए मात्र, **प्रकाशक** : रूपा पब्लिकेशन इंडिया प्रा. लि., अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली।

नौकरशाहों के पारिवारिक जीवन को परिभाषित करती 'मेमसाहब क्रानिकल' पुस्तक का लोकार्पण

हाल ही में डा. सुचिता मलिक की नवीनतम पुस्तक 'मेमसाहब क्रानिकल- ए स्टोरी बाय ग्रैट एंड ग्लैमर' का लोकार्पण दिल्ली के लोधी रोड स्थित इंडियन इस्लामिक कल्चरल सैंटर में किया गया। इस पुस्तक का लोकार्पण दिल्ली के गवर्नर तेजेंद्र खन्ना ने किया। रूपा एंड कंपनी द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक इंडियन मेमसाहब की दूसरी कड़ी है जिसमें लेखिका ने भारत में नौकरशाहों के जीवन और उनकी पत्नियों के जीवन चरित्र को उजागर किया है। इसके पूर्व उनकी प्रथम पुस्तक इंडियन मेमसाहब प्रकाशित हो चुकी है। इस मौके पर श्री खन्ना ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में सुचिता ने खुद को लेखिका के रूप में स्थापित किया है और उनकी पुस्तक पठनीय और रोचक है। उन्होंने कहा कि उनकी पुस्तक चेखव की कहानी पढ़ने जैसी है क्योंकि दोनों की लेखनी दिल से निकलती है और दिल को छूती है। वरिष्ठ पत्रकार शेखर गुप्ता ने कहा कि यह पुस्तक नौकरशाहों के पारिवारिक जीवन के उन पहलुओं को नए ढंग से परिभाषित करती है जो अब तक आम लोगों की पहुंच से बाहर थी। इस मौके पर हरियाणा सरकार के मुख्य सचिव वाई.एस. मलिक ने कहा कि इससे भारत के नौकरशाह और उनके जीवन को और अधिक समझने का मौका मिलेगा। इस अवसर पर कई गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

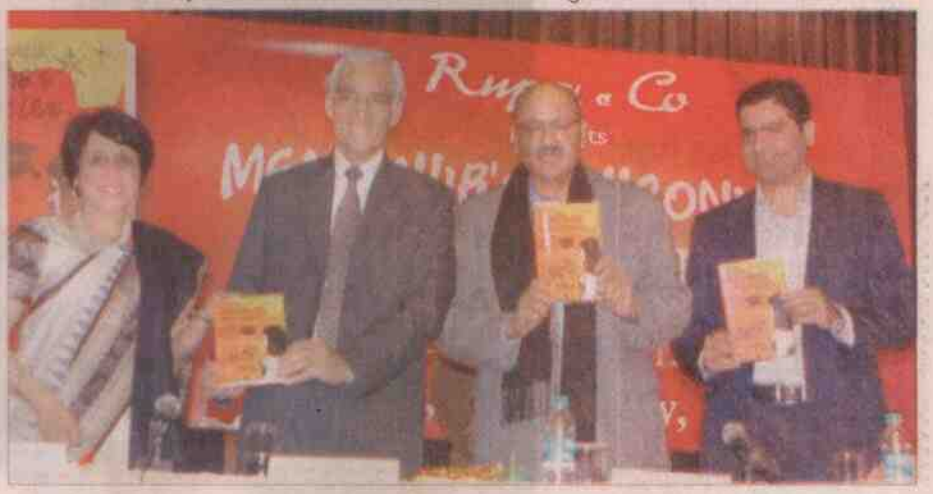

hindustantimes

hcitycity

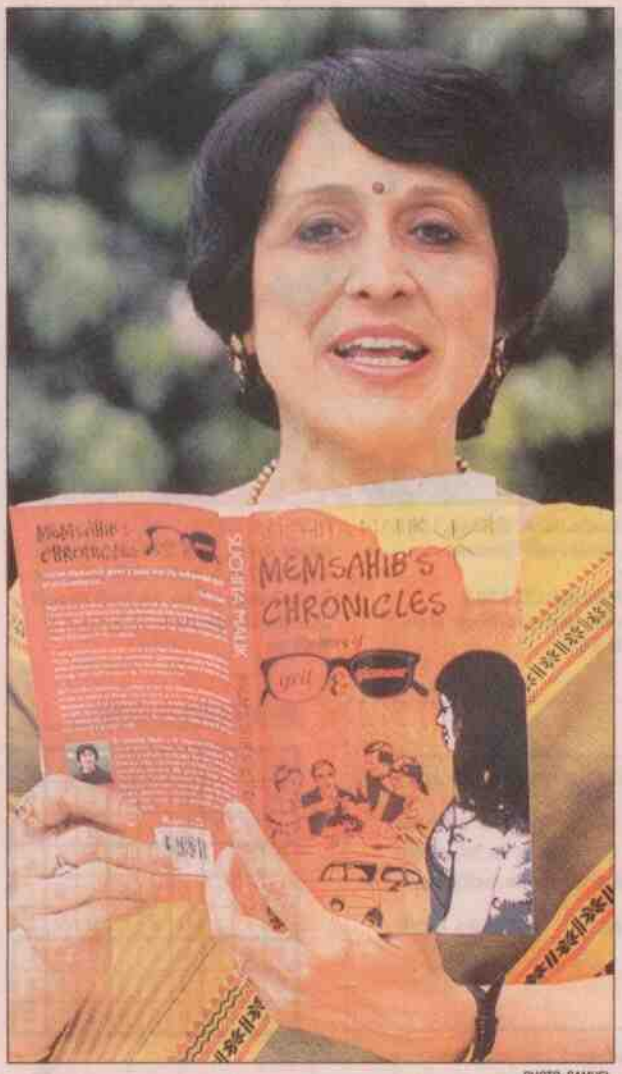

PHOTO: SAMUEL

Dr Malik's second book digs deeper into the inner world of a bureaucrat's wife

NOT A ROSY PICTURE THIS ONE

Disney Brar Talwar
disneytalwar@rediffmail.com

Writer Suchita Malik doesn't believe in mincing words when it comes to penning her autobiographical accounts in her writings lending the reader a peep into the zealously protected world of the civil servants.

Her first book Indian Memsahib, which released two years back, narrated the inner world of a civil servant's wife amid the hi-profile corridors of power, of their life not-so-rosy, and well, quite contrary to the popular belief.

Malik who teaches English at the Government College in Sector 11, says, "My first book was a result of my life's 20 years as a civil servant's wife. I had planned my second book on the day of the launch of my first book itself and when the book sold out three editions in two years, it was time to release the second one."

Memsahib's Chronicles delves into the world of civil servants' wives, both working ones as well as homemakers, their experiences, and yes, the envious lives of officers. "I have not taken a rose-tinted look at the private lives of the bureaucratic class but have brought out all the nitty-gritty of our lives to the forefront and many may not like the brazenness of the narrative of the book," she says. The book talks about the glamour, temptations, tensions and privileges of a memsahib.

Malik, who is married to Yudhvir Malik, an IAS officer posted in Haryana, avers, "The book is a string of episodes and while the first half of the book talks about the officer's life, its second half is centred around the memsahib's life. The book talks about the bleak realities, the behaviour and situations in an officer's life. It talks about how wives are the backbone of the officers' and how being an officer's wife is an issue of identity for some women."

Memsahib's Chronicles

आज समाज
वर्ष-5, अंक-48, अंबाला/चंडीगढ़, पृष्ठ-8, गुरुवार, 17 फरवरी 2011, शक संवत 1932, माघ शुक्ल 14-15, फाल्गुन मास की 05 प्रविष्टे, 13 रबी उल अवल, सन हिजरी 1432, चतुर्दशी-पूर्णि
02 अफसर की बीवी का हाल-ए-दिल किया सुचिता मलिक ने के जरिए बयां
चंडीगढ़
आईटी प्रोजेक्ट्स पर तेज होगा काम, ई-संपर्क और ग्राम संपर्क सेंटरों पर बढ़ेंगी सुविधाएं

अफसर की बीवी का हाल-ए-दिल बयां किया सुचिता मलिक ने

...चकाचौंध जिंदगी के साथ चुनौतियां

यशवीर कादियान

चंडीगढ़। एक आईएएस अफसर की बीवी होने का आमतौर पर लोग यही लगाते है कि वह सर्वसाधन सम्पन्न है, नौकर-चाकरों की फौज है और जिंदगी में मौज ही मौज है। किंतु, हकीकत इससे जुदा है। अफसरों की बीवियों की जिंदगी में चकाचौंध के साथ-साथ चुनौतियां और संघर्ष भी हैं। हरियाणा के उद्योग विभाग के वित्तायुक्त व प्रधान सचिव युद्धवीर मलिक की बीवी सुचिता मलिक ने अपनी दूसरी किताब **मेमसाहब-द क्रानिकल : ग्रिट एंड ग्लैमर** में एक अफसर की बीवी की रोजमर्रा की जिंदगी की दुश्वारियों का खूबसूरती से चित्रण किया है। सुचिता ने दिसंबर 2008 में इस मुद्दे पर अपनी पहली किताब **इंडियन मेमसाब** लिखी थी। पहला फिक्शन पढ़ कर लोगों ने उनको यही फीडबैक दिया कि यह अधूरा है और इसमें अभी काफी कुछ लिखा जा सकता है। लिहाजा उन्होंने इसका सीक्वेल लिखा। इसमें रघु और सुनैना नाम के दो चरित्रों के जरिए अपने अनुभवों को बताया है। सुचिता कहती है कि ये किताब पढ़कर बहुत से अफसरों की बीवियों ने यही कहा कि ऐसा लगता है कि ये तो उन सबकी कहानी है।

सुचिता कहती हैं कि किताब लिखने के लिए उन्हें प्रख्यात लेखक खुशवंत सिंह ने प्रेरित किया। खुशवंत सिंह ने उनके लिखे कुछ लेख देखे तो कहा कि वे एक अच्छा नावेल लिख सकती है। चंडीगढ़ स्थित सरकारी कालेज में पढ़ाने वाली सुचिता को पति के दिल्ली तबादले के कारण दो बरस तक छुट्टी लेकर उनके साथ रहना पड़ा

अपनी पुस्तक के साथ सुचिता। फोटो: आज समाज

सुचिता कहती हैं कि लोगों को यही कहते हुए सुना है कि अफसरों की बीवियों के ठाठ हैं। कोई टेंशन नहीं,लाल बत्ती की गाड़ी में घूमना फिरना। ये कुछ हद तक ठीक है कि अफसर की बीवी होने के कारण कुछ हद तक जिंदगी आसान भी हो जाती है। अगर अफसर कहीं चीफ गैस्ट हैं तो बीवी की हैसियत भी चीफ गैस्ट जैसी ही है। परिवार के छोटे मोटे काम आसानी से हो जाते हैं, लेकिन कईबार बीवी को अफसर पति की नौकरी के कारण कई तरह के समझौते भी करने पड़ते हैं, दबाव झेलने पड़ते हैं। मिसाल के तौर पर उन्होंने बताया कि एक दफा सरकार की नाराजगी के चलते उनके पति का हिसार के डीसी से चंडीगढ़ तबादला कर दिया गया, जबकि उनकी बदली नारनौल कर दी गई। कपल केस के चलते मियां-बीवी की बदली एक साथ हो जाती है लेकिन उनको नारनौल में नौकरी करनी पड़ी। ऐसा भी है कि अगर एक अफसर की बीवी नौकरी करती है तो काबिलियत के बावजूद लोगों को यही लगता है कि ये तो अफसर की बीवी के कारण ही नौकरी में चुनी गई हैं। बिजी लाइफ होने के कारण एक अधिकारी अपने परिवार के साथ ज्यादा समय नहीं गुजार पाते। अफसर की बीवी होने के कारण बहुत से लोग उनसे उम्मीद करते हैं कि वह प्रभाव का इस्तेमाल कर उनके गलत-सही काम करवाएं। सुचिता को घूमना, पढ़ना, पुरानी फिल्में देखना और संगीत सुनना पंसद है।

चंडीगढ़ भास्कर
www.dainikbhaskar.com
चंडीगढ़, 12 फरवरी, 2011
शनिवार
चंडीगढ़ . पंचकूला

सुचिता मलिक

इंडियन मेमसाब की कहानी

सुचिता मलिक की दूसरी किताब 'मेमसाब- द क्रॉनि
ब्यूरोक्रेट की बीवी होने के 'ग्रिट एंड ग्लैमर' की

प्रवीण कुमार डोगरा

आईएएस की पत्नी, रॉयल लाइफ, पेशे से प्रफेसर और दो बच्चों की मां। कितनी रॉयल है लाइफ या फिर कितने हैं कंप्रोमाइज। क्या सिविल सरवेंट की बीवी होना एक विशेषाधिकार है या फिर अपनी आजादी पर अंकुश। इसी 'ग्रिट और ग्लैमर' को पेश किया है जीसीजी-11 में प्रफेसर सुचिता मलिक ने।

खिड़की है लाइफ की: अपनी इस दूसरी किताब के बारे में बात करते हुए सुचिता कहती हैं,'यह किताब एक आईएएस की पत्नी की लाइफ में झांकने के लिए एक खिड़की है। आप यहां से इनकी लाइफ की हर अच्छी या खराब बात को देख सकते हैं। मैं खुद इस लाइफ को जीती हूं तो इसे लिखना मेरे लिए एक अलग एक्सपीरियंस रहा है। मगर इसे मेरी बायोग्राफी न समझा जाए क्योंकि इसे मैंने रघु और सुनैना के नाम से दो कैरेक्टर्स के साथ फिक्शन रूप दिया है।'

सोसाइटी की सोच से सोची किताब: आईएएस की बीवियों की लाइफ को बयां करता यह फिक्शन अपने में एक अलग सब्जेक्ट पर बेस्ड है। मगर इस सब्जेक्ट पर किताब लिखने के आइडिया पर सुचिता कहती हैं, मैंने कई सालों तक लोगों को यह कहते सुना कि इन वाइफ्स की लाइफ कितनी ग्लैमरस होती है, लाल बत्ती की गाड़ी, वीआईपी पार्टी, विदेशों में पढ़ते बच्चे। मगर साथ ही मैंने यह बताने की कोशिश भी
मुश्किल होता है बीवियों को पति के साथ श
उनके बिजी शेड्यूल में एडजस्ट करना, लो
सोच का सामना करना और इतने बड़े अफस
होने का प्रेशर कैरी करना।

हिट रहा है पहला फिक्शन भी: दिसंब
आया पहला फिक्शन 'इंडियन मेमसाब'
किया गया है। सुचिता बताती हैं कि 'लोगों ने
मुझे कहा कि यह बेहद इंटरेस्टिंग कहानी है
पढ़ते जब किताब खत्म हो जाती है तो ऐ
कि कहानी अधूरी रह गई। इसलिए इस
लिखने की सोची।'

Pics: Nitin Malik

WHEN SECRETS OF LIFE CAN BE READ IN PAGES

Suchita Malik and Tejendra Khanna

The sequel to Dr **Suchita Malik**'s 2008 debut novel, "Indian Memsahib", was recently launched at the Indian Islamic Cultural Centre. "Memsahib's Chronicles: A Story Of Grit And Glamour" by Rupa Publications India Pvt Ltd was unveiled by the Lt Governor of Delhi, **Tejendra Khanna**. Dr Malik said that it was Tejendra who urged her to write a sequel to her first novel almost two years ago. The book takes forward the journey of presenting the life of civil servants and their wives – unending work, glamourous garden parties, luncheons and picnics. Tejendra, who said he had promised Suchita Malik that he would launch the book, said that he found her style, "having the ease of reading that is present in the stories of Anton Chekov."

YS Malik, the principal secretary of commerce and industry, Haryana, was heard saying, "Everything in the book came from Suchita's observations of the bureaucratic world as a civil servant's wife, and not from any secrets leaked by me!" Aarushi Nigam

Navin M Raheja

The Indian EXPRESS
www.expressindia.com
CHANDIGARH | THURSDAY | FEBRUARY 10 2011

Chandigarh News in The Indian EXPRESS

An Inside Job

Writer Suchita Malik's second book delves deeper into the world of civil servants, and wipes off the gloss

KAMLESHWAR SINGH

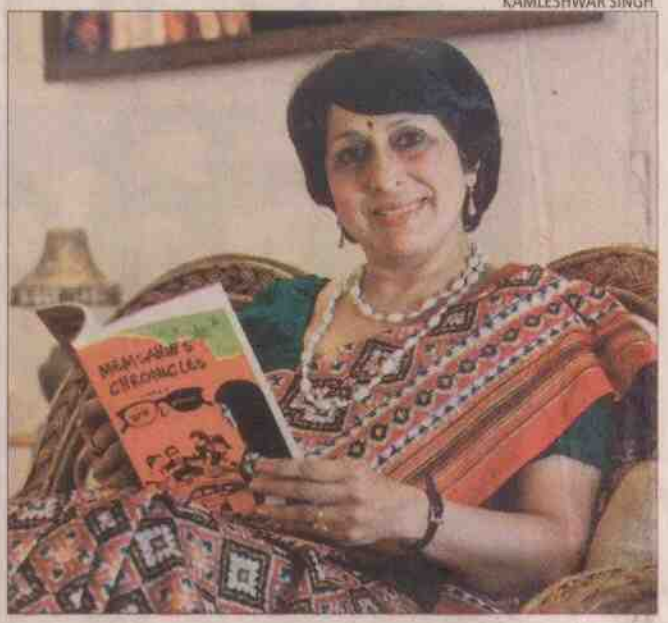

Suchita Malik

PARUL

"I DECIDED to take off the rose-tinted glasses and stare at the world of civil servants with dispassionate eyes and detachment," says Suchita Malik, whose first book, *Indian Memsahib,* was an autobiographical account of her life as the wife of a civil servant, Yudhvir Malik. After the book ran into three editions in two years, Malik decided that it was time to pen down a sequel— the result is *Memsahib's Chronicles (Rupa, Rs 195)*, which was launched a few days ago by Lt Governor Tejendra Khanna.

The protagonist in the books is Sunaina, a happy-go-lucky girl from Delhi who marries Raghu, a civil services officer. As relatives, friends and practically every other person in the world tells her how lucky she is to be married to a bureaucrat, Sunaina finds that life isn't exactly filled with roses all the way. In the 204-page-long *Memsahib's Chronicles*, Sunaina and Raghu have

be considered a bribe.

"My debut novel came from my journey of more than 25 years as an IAS officer's better-half. My second book draws upon the experiences of other women married into the services, as well as my husband's experiences," says Malik, adding that the book unfolds through a series of episodes. "It's all real, honest and objective, and I have written about the two *memsahibs* — the homemakers and the ones who work. There is no camouflage and I may end up annoying people," she says.

"It didn't take too long, just two years to pen the sequel. It was at the release function of *Indian Memsahib* that I decided to take the story forward," says Malik, at the Chandigarh launch. "The seemingly glamorous life has its share of stress, temptations, job hazards and competition. The *memsahibs* are the backbone of the *sahib log*. They have to maintain a balance, which can be tiring. For some, there's also the issue of

LG releases second book of Suchita Malik 'Memsahib's Chronicles'

Manoj Kr. Mandal
manoj@impressivetimes.com

New Delhi: Lt. Governor of Delhi Mr Tejendra Khanna released a book 'Memsahib's Chronicles - a story of grit and glamour' here today, which has been written by Dr Suchita Malik. This book is a sequel to her first book 'Indian Memsahib'. Appreciating the efforts of the author, Mr Tejendra Khanna said that after reading her first book, the feeling was, as if the journey of a train had come to an abrupt end, leaving the reader to look for more. He congratulated Suchita Malik for filling up this void .

LG of Delhi, Mr Tejendra Khanna releasing a book entitled as Memsahib's Chronicles written by Suchita malik

Mr Khanna said that Suchita Malik is an ardent writer, who understands the complexities of social environment. She seems to have very keenly observed the life of senior officers and understands the thinking of Memsahibs, who constitute the backbone of world of sahib-logs. Mr Khanna said that the author has tried to present the routine, complications and and the glamour in the life of these officers in a very simple manner. For this, she was able to see the life of her husband Yudhvir Singh Malik very closely.

Mr Khanna also appreciated the narration style of Suchina Malik and asked her to continue writing. Mentioning about the three reprints of her first book 'Indian Memsahib' brought out within a small period. Mr Khanna wished similar success for her second novel also. The author of the novel, Dr Suchita and Sunanina, the protagonists of 'Indian Memsahib' continue to retain centre-stage in this book also. Sunanina is also the story narrator.

The book is an attempt to present the amazing world of these civil servants as it is full of grit, glamour, tensions, temptations and privileges. Sunanina, despite being a part of the system, looks at this world with dispassionate eyes and provides a peep into this zealously guarded world. The Editor-in-Chief of Indian Express Mr Sekhar Gupta said that reading of this book of Suchita Malik is like showing civil servants in a glass house. Mr Yudhvir Singh Malik thanked all those present on this occasion including the CEO Mr Kapish Mehra of Rupa & Co, the publishers of the book.

CM opens BRT control room

Manoj Kr. Mandal
manoj@impressivetimes.com

New Delhi : Chief Minister Sheila Dikshit inaugurated a control centre that has access to live video feed from the Bus Rapid Transit corridor on Friday, only to find two government vehicles travelling illegally on the lane reserved for buses. Even as Dikshit inaugurated the centre at Kashmere Gate around noon, live feed from the stretch

said, "Don't spare anybody who violates traffic norms. Challan them immediately." The operations control centre is equipped to monitor traffic movement on the bus corridor from the comfort of the room, transport officials said. Speed cameras installed at 16 traffic junctions along the stretch between Ambedkar Nagar and Moolchand capture live video footage and route them to the control centre, where officials monitor traffic

अमर उजाला नई दिल्ली शनिवार 5 फरवरी 2011

डॉ. सुचित्रा मलिक की किताब का विमोचन करते उपराज्यपाल।

मेरी दिल्ली — सप्ताहांत
नई दिल्ली, 13- 19 फरवरी 2011 — 5

'मेम साहिब क्रोनिकल्स' का विमोचन

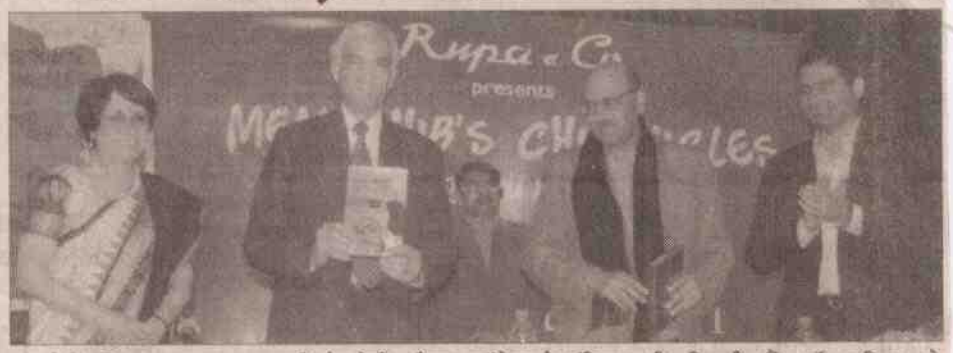

नई दिल्ली। गत शुक्रवार 4 फरवरी को दिल्ली के ले. गर्वनर तेजेन्द्र खन्ना ने आई.ए.एस. युद्धवीर सिंह मलिक की धर्मपत्नी डॉ. सुचिता मलिक की दूसरी पुस्तक 'मेमसाहिब क्रोनिकल्स का विमोचन किया। दो वर्ष पहले भी डॉ. मलिक की पहली पुस्तक 'इंडियन मेम साहिब' का भी विमोचन इन्हीं के कर-कमलों द्वारा किया गया था।

गौरतलब है कि डॉ. सुचिता मलिक ने लेडी श्रीराम कॉलेज से इंग्लिश ऑनर्स में बी.ए. पास किया और दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए. करने के पश्चात पंजाब विश्वविद्यालय से पी. एच.डी. की। डॉ. मलिक भारतीय विद्या भवन से पत्रकारिता का डिप्लोमा भी कर चुकी हैं, अब वे चंडीगढ़ गर्वनमेंट कॉलेज में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। डॉ. सुचिता मलिक विभिन्न अखबारों तथा पत्रिकाओं के लिए लेख भी लिखती हैं। डॉ. मलिक के माता-पिता उनकी उपलब्धियों से स्वयं को बेहद गौरवान्वित महसूस करते हैं। उनके पुत्र शहीद मेजर डॉ. अश्विनी कण्व ने देश के लिए बलिदान देकर उनका गौरव बढ़ाया, वहीं उनकी बेटी डॉ. सुचिता मलिक उसी गौरव को चार-चांद लगा रही है। मेमसाहिब क्रोनिकल्स के पुस्तक विमोचन के इस अवसर पर माननीय डॉ. हर्षवर्धन भी उपस्थित हुये साथ ही आर्य समाज के संरक्षक एवं उद्योगपति हीरालाल चावला, आर्य समाज के मंत्री राजेन्द्र लाम्बा तथा सेवा भारती के अध्यक्ष के.एल. गुप्ता ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

राष्ट्रीय संस्करण

पत्र नहीं मित्र

देशबन्धु

नई दिल्ली, शनिवार, 5 फरवरी, 2011 | वर्ष - 3 | अंक - 302 | पृष्ठ - 12 | आमंत्रण मूल्य - 2.00 रु.

राज्यपाल ने किया पुस्तक का विमोचन

नई दिल्ली, 4 फरवरी (देशबन्धु)। दिल्ली के उपराज्यपाल तेजेन्द्र खन्ना ने आज यहां सुचिता मलिक की पुस्तक महसाहिब्स क्रॉनिक्लस का विमोचन किया। यह पुस्तक एक तरह से उनकी पहली पुस्तक 'इंडियन मेमसाहिब' का दूसरा भाग है। खन्ना ने लेखिका के प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि उनके पहले उपन्यास 'इंडियन मेमसाहिब' को पढ़ने के बाद लगा था कि जैसे चलती रेलगाड़ी अचानक रुक गई हो।

पढ़ने वाले की जिज्ञासा अधूरी रह जाती है कि आगे क्या हुआ। सुचिता मलिक ने उस अधूरेपन को भरने के लिए जो प्रयास किया है, उसके लिए वे बधाई की पात्र हैं। उन्होंने कहा कि सुचिता मलिक एक उत्साही लेखिका हैं, जो सामाजिक परिवेश को और इसकी उलझनों को अच्छी तरह समझती हैं। साहिब लोगों की दुनिया और उसके साथ-साथ उनकी मेमसाहिबों की दुनिया और सोच को लेखिका ने बहुत बारीकी से समझकर पेश किया है। खन्ना ने कहा कि लेखिका ने बहुत ही सरल तरीके से साहब लोगों यानि बड़े प्रशासनिक अधिकारियों की दिनचर्या, परेशानियों और शानो-शौकत की जिंदगी का चित्र खींचा है। इसके लिए उन्हें अपने पति युद्धवीर सिंह मलिक को नजदीक से देखने का मौका मिला। उनकी पहली पुस्तक के तीन संस्करण निकलने का जिक्र करते हुए खन्ना ने कामना की कि उनकी यह पुस्तक भी वैसी ही सफलता प्राप्त करे। उपन्यास की लेखिका सुचिता मलिक ने इस अवसर पर कहा कि उनकी दूसरी पुस्तक पहले उपन्यास का ही इतिवृत्त है। इस उपन्यास में साहिब लोगों की मेहनत और जिम्मेदारियों से भरी जिंदगी के साथ-साथ अन्य पहलुओं को भी उकेरने की कोशिश की गई है। इंडियन एक्सप्रेस के प्रमुख सम्पादक शेखर गुप्ता ने इस अवसर पर सुचिता मलिक उनके पति युद्धवीर सिंह मलिक और उप-राज्यपाल तेजेन्द्र खन्ना के साथ अपनी पुरानी यादों का जिक्र किया। लेखिका सुचिता मलिक दिल्ली के श्रीराम कॉलेज की छात्रा रही हैं और इस समय चंडीगढ़ के गवर्नमेंट कॉलेज में प्राध्यापक हैं। उनके इस उपन्यास को और इससे पहले के उपन्यास को भी रूपा एंड कंपनी ने प्रकाशित किया है।

THE TRIBUNE, NEW DELHI, SATURDAY, FEBRUARY 5, 2011

Book gives a peep into the world of civil servants

TRIBUNE NEWS SERVICE

NEW DELHI, FEBRUARY 4

The Lt-Governor of Delhi, Mr Tejinder Khanna, released a book written by Dr Suchita Malik, 'Memsahib's Chronicles', here today.

A sequel to her first book 'Indian Memsahib', it is a story of grit and glamour

Mr Khanna said that Suchita understands the complexities of social life and, as the wife of senior officer Yudhvir Singh Malik, she seems to have very keenly observed the life of senior officers and their wives, the Memsahibs, who constitute the backbone of world of the sahibs. The author has presented the routine, the complications and and the glamour in the life of these officers in a simple manner.

Mr Khanna also appreciated the narration style of Suchita.

Lt-Governor of Delhi, Mr Tejinder Khanna, releases a book written by Dr Suchita Malik. Tribune photo

The author of the novel, Dr Suchita Malik said 'Memsahib's Chronicles' is a sequel to her first book. Raghu and Sunanina, the protagonists of 'Indian Memsahib', continue to retain centre-stage in this book also. The book is an attempt to present the amazing world of civil servants as it is full of grit, glamour, tensions, temptations and privileges. Sunanina, despite being a part of the system, looks at this world with dispassionate eyes and provides a peep into this zealously guarded world.

लोक सम्पर्क एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग, हरियाणा

प्रैस कतरने

दिनांक - 5 FEB 2011

वीर अर्जुन

उपराज्यपाल तेजेन्द्र खन्ना ने सुचिता मलिक की दूसरी पुस्तक मेम साहिब क्रानिकल्स का किया विमोचन

कहा- उपन्यास की सरल शैली सराहनीय

नई दिल्ली, (वीअ)। दिल्ली के उपराज्यपाल श्री तेजेन्द खन्ना ने आज यहां सुचिता मलिक की पुस्तक मेम साहिब क्रानिकल्स का विमोचन किया। यह पुस्तक एक तरह से उनकी पहली पुस्तक 'इंडियन मेमसाहिब' का दूसरा भाग है।

श्री तेजेन्द खन्ना ने लेखिका के प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि उनके पहले उपन्यास 'इंडियन मेमसाहिब' को पढक्वने के बाद लगा था कि जैसे चलती रेलगाड़ी अचानक रूक गई हो। पढक्वने वाले की जिज्ञासा अधूरी रह जाती है कि आगे क्या हुआ। सुचिता मलिक ने उस अधूरेपन को भरने के लिए जो प्रयास किया है, उसके लिए वे बधाई की पात्र है।

श्री खन्ना ने कहा कि सुचिता मलिक एक उत्साही लेखिका है, जो सामाजिक परिवेश को और इसकी उलझनों को अच्छी तरह समझती है। साहिब लोगों की दुनिया और उसके साथ-साथ उनकी मेमसाहिबों की दुनिया और सोच को लेखिका ने बहुत बारीकी से समझकर पेश किया है। श्री खन्ना ने कहा कि लेखिका ने बहुत ही सरल तरीके से साहब लोगों यानि बड़े प्रशासनिक अधिकारियों की दिनचर्या, परेशानियों और शानो-शौकत की जिंदगी का चित्र खींचा है। इसके लिए उन्हें अपने पति युद्धवीर सिंह मलिक को नजदीक से देखने का मौका मिला। उन्होंने श्रीमती मलिक की वर्णन शैली की भी सराहना की और कहा कि उन्हे अपना लेखन ज़ारी रखना चाहिए। उनकी पहली पुस्तक के तीन संस्करण निकलने का

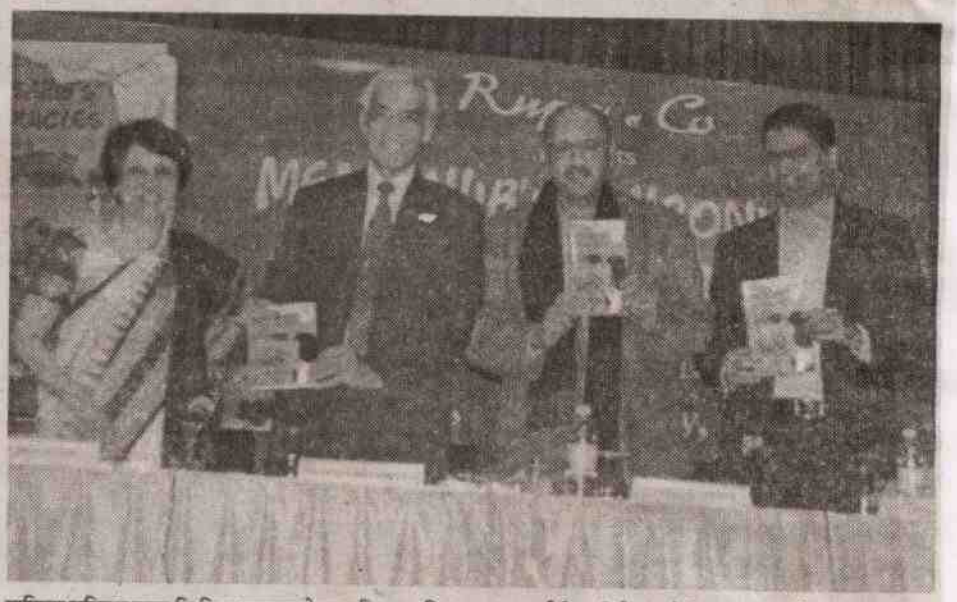

सुचिता मलिक द्वारा लिखित पुस्तक मेम साहिब क्रानिकल्स का नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में विमोचन करते हुए उप राज्यपाल तेजेन्द्र खन्ना।

जिक्र करते हुए श्री खन्ना ने कामना की कि उनकी यह पुस्तक भी वैसी ही सफलता प्राप्त करे। उपन्यास की लेखिका श्रीमती सुचिता मलिक ने इस अवसर पर कहा कि उनकी दूसरी पुस्तक मेम साहिब क्रानिकल्स उनके पहले उपन्यास का ही इतिवृत्त है। इस उपन्यास मे साहिब लोगो की मेहनत और जिम्मेदारियों से भरी जिंदगी के साथ-साथ अन्य पहलुओं को भी उकेरने की कोशिश की गई है। इस उपन्यास के मुख्य पात्र पहले उपन्यास वाले 'इंडियन मेमसाहिब' के रघु और सुनयना ही है। सुनयना इस उपन्यास की सूत्रधार भी है। उपन्यास मे बड़े साहिब लोगों की शानो-शौकत, तनावों, आकांक्षाओं और विशिष्ट व्यक्ति होने के नाते उनकी विशिष्ट शैलियों की झलक मिलती है। घरेलू मोर्चे को सम्भालने वाली मेमसाहिबें साहिब लोगों की दुनिया में भी पैठ रखती है। सुनयना इस सब का हिस्सा होते हुए भी हर चीज को स्वतंत्र नजरिये से पेश करने की कोशिश करती है। इंडियन एक्सप्रेस के प्रमुख सम्पादक श्री शेखर गुप्ता ने इस अवसर पर श्रीमती सुचिता मलिक, उनके पति श्री युद्धवीर सिंह मलिक और उप-राज्यपाल श्री तेजेन्द्र खन्ना के साथ अपनी पुरानी यादों का जिक्र किया। सुचिता मलिक की दूसरी पुस्तक के बारे में उन्होंने कहा कि इस पुस्तक में बड़े प्रशासनिक अधिकारियों की जिन्दगी का झरोखा इस तरह से पेश किया है, जैसे लेखिका उन्हें एक शीशे के घर में बैठे देख रही हों।श्री युद्धवीर सिंह मलिक ने इस मौके पर मौजूद सभी लोगो का धन्यवाद किया। समारोह में बड़ी संख्या में उनके मित्र और अधिकारी मौजूद थे। लेखिका सुचिता मलिक दिल्ली के श्रीराम कालेज की छात्रा रही हैं और इस समय चण्डीगढक्व के गवर्नमेंट कॉलेज में प्राध्यापक हैं। उनके इस उपन्यास को और इससे पहले के उपन्यास को भी रूपा एंड कम्पनी ने प्रकाशित किया है। पुस्तक के प्रकाशक रूपा एंड कम्पनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री कपीश मेहरा भी समारोह मे मौजूद थे।

वीर अर्जुन

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, हरियाणा
प्रैस कतरनें
दिनांक 5 FEB 2011
हरिभूमि

नई दिल्ली। सुचिता मलिक की पुस्तक मेमसाहिब चरोनिकल्स का विमोचन करते उपराज्यपाल तेजेंद्र खन्ना। छाया : हरिभूमि

हरिभूमि

DELHI
THE HINDU • SATURDAY, FEBRUARY 5, 2011

A story of grit and glamour

NEW DELHI: Delhi's Lieutenant-Governor Tejendra Khanna released a book, "Memsahib's Chronicles: A story of grit and glamour", written by Dr. Suchita Malik at a function here on Friday. The book is a sequel to her first book "Indian Memsahib". Mr. Khanna described Suchita Malik as "an ardent writer who understands the complexities of social environment". "She seems to have very keenly observed the life of senior officers and understands the thinking of memsahibs who constitute the backbone of world of sahib-logs."

Mr. Khanna said the author has tried to present the routine, complications and the glamour in the life of these officers in a very simple manner. "For this, she was able to see the life of her husband Yudhvir Singh Malik very closely," he added.

लोक सम्पर्क एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग, हरियाणा
प्रैस कतरन
दिनांक - 5 FEB 2011
महामेधा

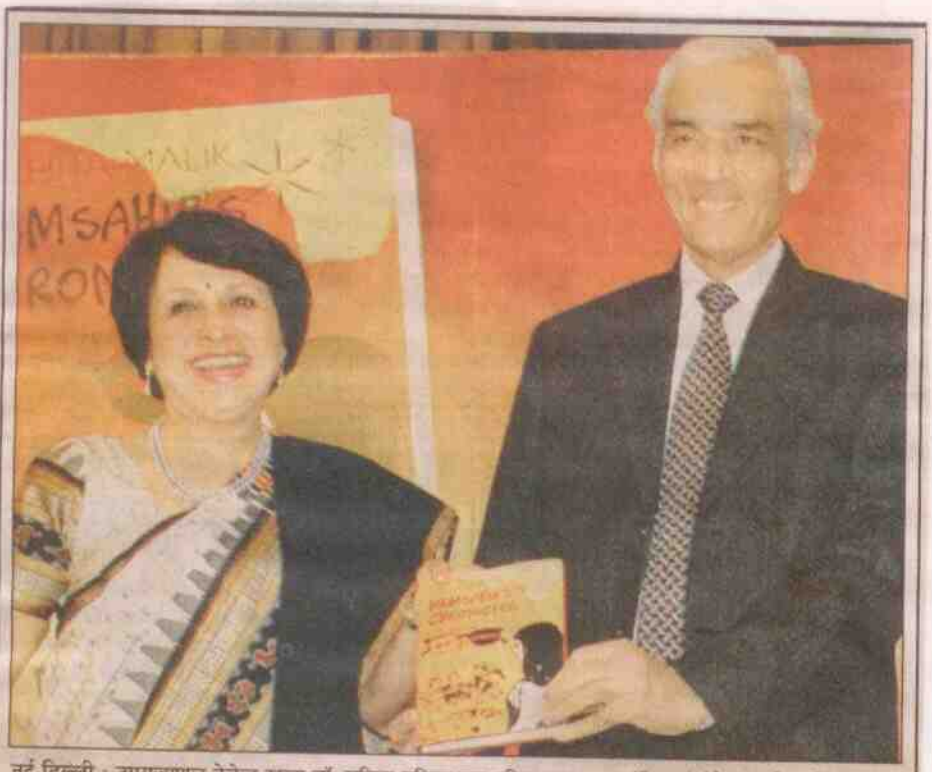

नई दिल्ली : उपराज्यपाल तेजेन्द्र खन्ना डॉ. सुचिता मलिक द्वारा रचित पुस्तक का इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में लोकार्पण करते हुए। साथ में हैं पुस्तक की लेखिका डॉ. मलिक। महामेधा

महामेधा